स्वच्छ भारत, समृद्ध भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

बागवानी मिशन
Horticulture Mission

जनपद लखनऊ के आम के बागों में पूरे वर्ष में होने वाली कर्षण क्रियाओं का कैलेण्डर

उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग

उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ

तकनीकी योगदान

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

रहमानखेड़ा, पोस्ट–काकोरी, लखनऊ–226101

जनवरी

- जल्दी निकली हुई पुष्प कलिकाओं (बौर) को यथासम्भव तोड़ देना चाहिए। इससे गुम्मा रोग का प्रकोप कम हो जाता है।
- यदि किसी कारण से गुजिया की रोकथाम के लिए एल्काथीन पट्टी न लगायी जा सकी हो या क्लोरपायरीफॉस 1.5 डी. धूल का बुरकाव न किया हो और गुजिया पेड़ पर चढ़ गयी हो तो क्विनालफॉस 25 ई.सी. (1 मि.ली./ली.) या डाएमेथोएट 30 ई.सी. प्रतिशत (1.5 मि.ली./ली.) को पानी में घोल कर छिड़काव किया जाना चाहिए।
- गुजिया कीट के नियंत्रण के लिए लगायी गयी पालीथीन पट्टी को कपड़े से साफ कर देना चाहिए तथा यदि पालीथीन पट्टी सरक गयी हो तो इसे ठीक कर देना चाहिए।
- पाले के प्रकोप से पौधों को बचाने के लिए नये पौधों को ढकना चाहिए और बाग की सिंचाई करनी चाहिए।

फरवरी

- मधुमक्खियों की कालोनी बक्से सहित फूल आने पर बागों में रखना चाहिए। इससे परागण अच्छा होता है तथा फल अधिक मात्रा में लगते हैं।
- बौर निकलने के समय मिज कीट का प्रकोप दिखते ही क्विनालफॉस 25 ई.सी. (1 मि.ली./ली.) या डाएमेथोएट 30 ई.सी. प्रतिशत (1.5 मि.ली./ली.) को पानी में घोल कर छिड़काव किया जाना चाहिए।
- बौर निकलने पर यदि भुनना कीट का प्रकोप 5-10 भुनगा प्रति बौर हो तो नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. (3-4 मि.ली. प्रति 10 ली.) पानी में घोल कर छिड़काव किया जाना चाहिए।
- खर्रा रोग संक्रमण की शुरूआत यदि दिखलायी पड़े तो निदान हेतु प्रथम छिड़काव घुलनशील गंधक का 2 ग्रा./ली. पानी की दर से करना चाहिए।
- गुजिया के लिए लगायी गयी पालीथीन पट्टी को कपड़े से साफ करें।

मार्च

- भुनगा एवं खर्रा रोग की रोकथाम के लिए प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 2 मिली/ली. या थायामेथोक्जाम 25 डब्ल्यू पी (3 ग्राम/ली. तथा घुलनशील गंधक 80 डब्ल्यू.पी. (2 ग्रा./ ली.या हेक्साकोनाजोल 4 डब्ल्यू.पी.+जिनेब 68 डब्ल्यू. पी. या हेक्साकोनाजोल 5 एस.एल. (0.1%) पानी में मिला कर छिड़काव करना चाहिए। ध्यान रखें कि परागण के समय कीटनाशक का छिड़काव नहीं करना है।
- बौर को झुलसा एवं छोटे फलों को एन्थ्रेक्नोज के प्रकोप से बचाने हेतु कार्बेन्डाजिम + मेंकोजेब (63 +12 डब्ल्यू पी) 2 ग्राम/ली. या थायोफेनेट मिथाइल 70 डब्ल्यू. पी. (1 ग्रा./ली. पानी में) का छिड़काव करना चाहिए।

अप्रैल

- फलों को गिरने से रोकने लिए एन.ए.ए. 20 पी.पी.एम. (प्लेनोफिक्स 90 मि.ली./200 ली.) का छिड़काव करना चाहिए।
- गुम्मा व्याधि ग्रस्त बौर को हटा देना चाहिए।
- जब फल मटर के दाने के बाराबर हो जाये तो सिंचाई शुरू कर देनी चाहिए। थाले बना कर 10-15 दिनों के अन्तराल पर 2-3 सिंचाई करनी चाहिए।
- आम बाग में फल मक्खी के नियंत्रण के लिए मिथाइल यूजीनाल यौन गंध ट्रैप (10 प्रति हे.) लगाना चाहिए।
- यदि ईंट के भट्टे बाग के पास हों या आम के बाग की भूमि बलुई हो तो कोयलिया तथा आंतरिक ऊतक सड़न के निदान हेतु बोरेक्स 1 प्रतिशत (10 ग्रा./ली.) का छिड़काव अन्तिम सप्ताह में करना चाहिए।
- प्ररोह भेदक कीट से प्रभावित नये प्ररोहों को काटकर कीट सहित नष्ट कर देना चाहिए। प्ररोह भेदक कीट और पत्ती काटने वाले घुन (विविल) के नियंत्रण के लिए क्विनालफॉस 25 ई.सी. (2 मि.ली. दवा/ली.) का छिड़काव करना चाहिए।

मई

- फल मक्खी कीट के नियंत्रण के लिए यौनगंध ट्रैप लगाये रखना चाहिए।
- कोयलिया और आन्तरिक विगलन के नियंत्रण के लिए 01 प्रतिशत बोरेक्स का छिड़काव करना चाहिए।
- फलों की पैकिंग के लिए आकर्षक तथा मजबूत गत्ते के डिब्बों की व्यवस्था करनी चाहिए।
- तुड़ाई उपरान्त होने वाले रोग तथा फल मक्खी के नियंत्रण के लिए फलों की थैला बंदी करना चाहिए।

- तुड़ाई से तीन सप्ताह पूर्व थायोफेनेट मिथाइल 70 डब्ल्यू. पी. (1.0 ग्राम प्रति लीटर) का पहला छिड़काव तुड़ाई उपरान्त होने वाले रोगों की रोकथाम के लिए करना चाहिए।
- जीवाणु कैंकर की संभावना होने पर स्ट्रैप्टोसाकलिन 200 पी.पी.एम. (0.2 मिली/ली. का छिड़काव करना चाहिये।

जून

- यौनगंध ट्रैप के लिए नये प्लाईवुड गुटके लगाना चाहिए।
- परिपक्वता आने पर प्रातः अथवा सायंकाल फलों की 8-10 मि.मी. डंठल सहित तुड़ाई की जानी चाहिए। जिससे उन्हें दोपहर की गर्मी से बचा कर भंडारण अवधि को बढ़ाया जा सकता है।
- छोटे पौधों में फल की तुड़ाई सिकेटियर की सहायता से तथा ऊँचे वृक्षों में फल तोड़क यंत्र (हारवेस्टर) की सहायता से की जानी चाहिए।
- तुड़ाई किए फलों को सीधे मिट्टी के सम्पर्क में नहीं आने देना चाहिए।
- चेप से फल को बचाने के लिए चेंप निकालना जरूरी है। फलों को रैक पर उल्टा रख कर इसे करें।
- तुड़ाई के बाद फल को सावधानीपूर्वक प्लास्टिक टोकरी में रखकर बाग से पैकेजिंग शेड तक परिवहन किया जाना चाहिये।
- पैकेजिंग शेड में फलों की ग्रेडिंग करना चाहिए। छोटे, विकृत तथा दागी या किसी प्रकार की चोट लगे फलों को अलग करना चाहिए।
- भण्डारण के पूर्व फलों को साफ पानी से धो कर छाये में पुरी तरह सुखा लेना चाहिए।
- आम को एकसार पकाने के लिए 750 पी.पी.एम. इथरल (1.8 मि.ली./ली.) गुनगुने पानी ($52 \pm 2°$ सें.) के घोल में 5 मिनट तक डुबो कर तदनुपरान्त साये में सुखाने के बाद भण्डारण करना चाहिए। इसी में (0.5 ग्रा./ली.) थायोफेनेट मिथाइल मिलाने से अन्य फफूँदी भी नष्ट हो जाती हैं जिससे अच्छा पकता है।
- फलों को मंडियों तक ले जाने के लिए उचित व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए।
- उपचारित आम को कार्डबोर्ड के आकर्षक तथा अन्दर से लाइनिंग किए 5 कि.ग्रा. की क्षमता वाले डिब्बों में स्वच्छ अवस्था में पैक करना चाहिए तथा फिर निर्यात हेतु भेजना चाहिए।

जुलाई

- देर से पकने वाली किस्मों के बाग में यौनगंध ट्रैप के गुटके पुनः एक बार बदलना चाहिए।
- फल तुड़ाई एवं उसके उपरांत की जानी वाली कार्रवाई जून माह अनुसार इस माह भी की जानी चाहिए।
- प्ररोह भेदक कीट से प्रभावित प्ररोहों को काटकर कीड़े सहित नष्ट कर दें। प्ररोह भेदक कीट और पत्ते काटने वाले घुन (विविल) के नियंत्रण के लिए क्विनालफॉस 25 ई.सी. (2 मि.ली./ली.) का छिड़काव करना चाहिए।
- 40 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद या कम्पोष्ट के साथ 250 ग्रा. एजोस्पाइरिलम मिला कर दो मीटर के व्यास वाले थाले में अच्छी तरह मिलाना चाहिए या सिफारिश की गयी है कि रासायनिक खादों की मात्रा (नाइट्रोजन 1000 ग्रा., फॉस्फोरस 500 ग्रा. एवं पोटाश 1000 ग्रा.) को तने से 1.50 मी. की दूरी पर 20-20 से.मी. गहरी नाली में प्रयोग करना चाहिए तथा नाली को उर्वरक मिश्रण के बाद बन्द कर देना चाहिए।

अगस्त

- तराई वाले इलाकों में आम का मुख्य कीट शूट गाल सिला है। इसका इस समय प्रकोप हो सकता है। इससे बचने के लिए 15 अगस्त के आसपास पहला छिड़काव थायामेथोमसाम 25 डब्ल्यू जी (0.30 ग्राम/ली.) या डाइमेथोएट 30 ई.सी. (2 मि.ली./ली.) का छिड़काव करना चाहिए।
- इसी माह में जाला बनाने वाला कीट (टेन्टकैटरपिलर कीट) का भी प्रकोप होता है। इसलिए जाला छुड़ाने वाले यंत्र से जाले को साफ करें एवं प्रभावित प्ररोहों को काट कर कीड़ों सहित जला दें। अगर प्रकोप अधिक हो तो कीटनाशकों जैसे लैम्डा साईलोथ्रिन 5 ई.सी. (1 मिली. /ली.) का छिड़काव करना चाहिए।

सितम्बर

- यदि संक्रमण हो और शूट गाल सिला का प्रकोप बना रहे तो एक और छिड़काव अगस्त माह में बताये अनुसार पुनः करना चाहिए। ध्यान रखें कि कीटनाशक बदल दें।
- रेड रस्ट या एन्थ्रेक्नोज के अधिक प्रकोप होने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड या कॉपर हॉइड्राक्साइड 50 डब्ल्यू.पी. (0.3%) का छिड़काव करना चाहिए।

- पैक्लोब्यूट्राजॉल का जो एक अन्त: प्रवाही वानस्पतिक पादप वृद्धि विनायक है, प्रति वृक्ष 3.2 मि.ली. प्रति लीटर छाया क्षेत्र की दर से तने से 1.5-2 मीटर दूरी पर बनायी गयी नाली में प्रयोग करना चाहिए।

अक्टूबर

- गुम्मा व्याधि का संक्रमण होने पर अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में 200 पी पी एम, एन ए ए (40 मि.ली./100 ली.) का छिड़काव व्याधि नियंत्रण हेतु करना चाहिए।
- पैक्लोन्यूट्राजॉल का प्रयोग यदि सितंबर में न किया हो तो प्रथम सप्ताह में करें।
- जाला कीट (टेन्टकैटरपिलर कीट) कीड़ों का अधिक प्रभाव होते हुए उपर्युक्त बतायी गयी किसी एक दवा का प्रयोग करना चाहिए।
- उल्टा सूखा रोग (डाई बैक) से ग्रसित टहनियों की कटाई-छँटाई करनी चाहिए। टहनियों को हरे हिस्से से 5-8 से.मी. नीचे से काटने के बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराइड या कॉपर हॉइड्राक्साइड 50 डब्ल्यू.पी. (0.3%) 3 ग्राम प्रति ली. की दर से दो छिड़काव 15 दिनों के अन्तर पर करना चाहिए। इससे फोमा ब्लाइट को भी रोका जा सकेगा।

नवंबर

- बागों में उथली जुताई करनी चाहिए, जिससे मिज कीट, फल मक्खी, गुजिया कीट एवं जाले वाले कीट की वो अवस्थाएँ जो जमीन में दूसरे वर्ष आने तक पड़ी रहती हैं, नष्ट हो जायें। कुछ तो गुड़ाई करते समय मर जाती हैं, कुछ परजीवी एवं परभक्षी कीड़ों या दूसरे जीवों का शिकार हो जाती हैं और कुछ जमीन से ऊपर आने पर अधिक सर्दी या ताप की वजह से मर जाती है।
- यदि बाग में उकठा की समस्या हो तो पौधों की जड़ों के पास उर्वरक के साथ 50-100 ग्रा. थायोफेनेट मिथाइल 50 डब्ल्यू.पी. प्रति वृक्ष का प्रयोग करना चाहिए और सिंचाई करना चाहिए।
- शूट गाल सिला एवं जाला बनाने वाले कीड़ों से प्रभावित शाखाओं की छंटाई कर उन्हें नष्ट कर देना चाहिए।

दिसंबर

- गुजिया कीट को पेड़ों पर चड़ने से रोकने के लिए इस माह के अन्तिम सप्ताह में पेड़ के तने पर चारों ओर भूमि से लगभग 40 से.मी. ऊपर मिट्टी की पतली परत चढ़ा कर 400 गेज की मोटी सफेद पालीथीन की 25 से.मी. चौथी पट्टी लपेट कर उसके दोनों तरफ सुतली से बाँधना चाहिए। तने के आसपास क्लोरपायरीकास 1.5 डी. 50 से 100 ग्राम प्रति पेड़ का छिड़काव करें।
- तना भेदक कीट के नियंत्रण के लिए, पहले छेदों को साफ कर देते हैं, फिर छिद्रों में 0.05 प्रतिशत डाइक्लोरोवास 76 ई.सी. का घोल छेदों में डाल कर इसे बंद कर दें। इनका प्रकोप साल में एक ही बार होता है और जीवन चक्र लगभग एक साल का होता है। यदि प्रकोप होने पर तुरन्त रोकथाम कर ली जाय तो हानि की संभावना कम होती है।
- पाले के प्रकोप से पौधों को बचाने के लिए नये पौधों को ढकना चाहिए और बाग की सिंचाई करनी चाहिए।

नोट : उपरोक्त फसल सुरक्षा संस्तुतियों का उपयोग आवश्यक होने पर ही करना चाहिए। प्रत्येक छिड़काव की प्रभाविकता बढ़ाने के लिए घोल में 1 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से तरल साबुन (स्टीकर/स्प्रेडर) मिलायें।

सम्पादन
शैलेन्द्र राजन, ए.के. सिंह, पी.के. शुक्ल, गुंडप्पा, धीरज शर्मा
भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
ICAR-Central Institute for Subtropical Horticulture
रहमानखेड़ा, पोस्ट-काकोरी, लखनऊ-226 101
Rehmankhera, P.O. Kakori, Lucknow - 226 101
दूरभाष/Tel : (0522) 2841022-24, 2841026, फैक्स/Fax :(0522) 2841025
ईमेल/Email : cish.lucknow@gmail.com, फोन-इन-लाइव/Phone-in-live : 0522-2841082
वेबसाइट/Website : www.cish.res.in